डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 10.08.2020

व्याख्यान संख्या-33 (कुल संख्या-69)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

मैया बहुत बुरो बलदाऊ।...

...सूरदास बल बड़ौ चबाई, तैसेहिँ मिले सखाऊ।।

प्रस्तुत व्याख्येय पद्यावतरण के रचयिता हिन्दी साहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र महाकवि सूरदास हैं। प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' में संकलित है।

प्रस्तुत प्रसंग श्रीकृष्ण की बाललीला का है, जिसमें उनका वर्णन एक सामान्य मानव के सामान्य बालक की तरह हुआ है, जिसकी अपने भाई तथा

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

साथियों के साथ नोकझोंक होती रहती है तथा कोई छोटा बालक अपनी माँ के पास शिकायत करते रहता है।

कविवर सूरदास जी कृष्ण द्वारा माता यशोदा के पास शिकायत किये जाने का वर्णन करते हुए कहते हैं कि हे माता यह दाऊ बलराम बहुत बुरा है। (आज वन में गाय चराते समय) कहने लगा कि 'वन में बड़ा तमाशा है, सभी बालक एकत्र होकर आ जाओ।' मुझे भी पुचकारकर वहा ले गया जहाँ झाउओं का घना वन है। वहाँ जाने पर यह कहकर भाग गया कि 'अरे भाग चलो, यहाँ हाऊ काट खाएगा।' मैं डरता था, काँपता था और रोता था, परंतु मुझे धैर्य दिलाने वाला भी कोई नहीं था। मैं डर से स्तंभित हो गया था इसलिए भाग भी नहीं पाता था। वे सब आगे-आगे भागे जाते थे। दाऊ मुझसे कहता है कि तू मोल लिया हुआ है और वे स्वयं महाजन बनते हैं अर्थात् स्वयं को भला समझते हैं। सूरदास जी कहते हैं कि 'बलराम तो बड़ा झूठा है और वैसे ही उसे सखा भी मिल गये हैं।'

इस पद्य का अंतिम कथन कृष्ण की शिकायत का अंग भी हो सकता है और कृष्ण की शिकायत के बाद माता यशोदा की टिप्पणी भी, क्योंकि सूरदास के अनेक पदों में अंतिम पंक्ति में माता यशोदा कुछ न कुछ टिप्पणी करती हैं।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत पद्य में 'मौड़ा' का अर्थ बालक है। 'चुचकारि' (चुचकारना) सामान्य लोगों के बीच प्रचलित शब्द है जिसका अर्थ पुचकारना है। 'हाऊ' अथवा 'हौआ' बच्चों को डराने वाला शब्द है जिससे यह भाव व्यक्त किया जाता है कि कोई भयंकर जानवर है जो कि खा जाता है। 'थरसि' जाना स्तंभित हो जाने का भाव प्रकट करता है, अर्थात् डर से ठहरे रह जाना। 'अगाऊ' का अर्थ है 'आगे ही आगे'। 'साऊ' 'साहू' से बना शब्द है जिसका अर्थ 'महाजन' है। प्रस्तुत पद में इस शब्द का प्रयोग भला अर्थात् 'अच्छा' के अर्थ में हुआ है। 'चवाई' का अर्थ ऐसा दुष्ट है जो बुरी बातें जानबूझकर बोलते रहते हैं।